पाठ–10

'कैलास मानसरोवर – यात्रा'

IA4SGQ

तरूण विजय

जन्म– 2 मार्च,1956

लेखक परिचय

तरूण विजय, राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत पत्रकार एवं चिन्तक हैं। सम्प्रति वे राज्यसभा के सदस्य व श्यामाप्रसाद मुखर्जी शोध संस्थान के अध्यक्ष हैं। वह 1986 से 2008 तक करीब 22 सालों तक देश में बहुप्रतिष्ठित पत्र 'पांचजन्य' के संपादक रहे। इन्होंने अपने आजीविका की शुरूआत ब्लिट्ज अखबार से की थी। दादर और नगर हवेली में आदिवासियों के बीच सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में सक्रिय जीवन अनुकरणीय रहा है। तरुण विजय शौकिया फोटोग्राफर भी हैं और हिमालय उन्हें बहुत लुभाता है।

सिंधु नदी की शीतल बयार, कैलास पर शिव मंत्रोच्चार, चुशूल की चढ़ाई या बर्फ से जमे पहाड़ों पर चहलकदमी– इन सबको मिला दें तो कुछ–कुछ तरूण विजय नज़र आएंगे। इनके द्वारा रचित यात्रा वृत्तांत में इनका राष्ट्रीय, सांस्कृतिक और मानवीय चिंतन मुखर हुआ है। इनका सर्वाधिक उल्लेखनीय यात्रा वृत्तांत –'कैलास मानसरोवर' रहा जिसका प्रत्यक्ष वर्णन इनकी अपनी सचित्र पुस्तक–'कैलास मानसरोवर–यात्रा' में किया है।

पाठ परिचय

'कैलास मानसरोवर–यात्रा' के माध्यम से लेखक ने धार्मिक और सांस्कृतिक मान्यता को रेखांकित करते हुए जिस प्राकृतिक सौन्दर्य का सजीव चित्र प्रस्तुत किया है, वह लेखक की जीवन्त अनुभूति से एकाकार कराता है। मानसरोवर एवं कैलाश यात्रा के प्रत्येक पड़ाव का सूक्ष्म अंकन कर लेखक ने यात्रा वृत्तांत में पाठक को सह यात्री का रोमांचक अनुभव कराया है। लेखक की प्रवाहमयी शैली एवं शब्द चयन श्लाघनीय है।

कैलास मानसरोवर–यात्रा

तकलाकोट के पुरंग गेस्ट हाउस में एक और अजूबा हुआ। क्षितिज पर सूरज को अपनी स्वर्णमयी आभा का आलोक बिखेर अस्त होते समय का नयनाभिराम दृश्य देखकर जब हम अपने कमरों की ओर लौटे तो एक आवाज सुनाई दी – 'नमस्ते जी। कोई दिक्कत हो तो बताने का।' अरे वाह ! वह तिब्बती लड़का बड़ी अच्छे से हिंदी बोल रहा था। विदेश में , अपनी मातृभाषा के दो शब्द सुनकर मन के तार कैसे झनझना जातें हैं ।

उसका नाम टेम्पा था। देहरादून में पला बढ़ा। फिर रिश्तेदारों से मिलने चुपके से तिब्बत पहुँचा, घर वापसी में पकड़ लिया गया। किसी तरह छूट तो गया पर वह तकलाकोट का ही होकर रह

गया। वहीं शादी रचा ली। पत्नी गेस्ट हाउस में काम करती है। वह हमें घर ले गया। उत्साह से पुलकित हो उसने तिब्बती मक्खनवाली नमकीन चाय बनवाई। उसमें याक के दूध से बना मक्खन इस्तेमाल होता है– बड़ी मुश्किल से नाक बंद कर घूँट–घूँट चाय पी। मना इसलिए नहीं किया ताकि वह बुरा न मान जाये।

अगले दिन गणेश चतुर्थी थी। सुबह पाँच बजे उठे। सामान बाँधा। पौने छः बजे नाश्ता किया। नाश्ते में तली मूँगफली,रस–जैम, चाय, साबुदाने के पापड़ और मिली–जुली सब्जी थी। अच्छी होने के बावजूद एक तो चीनी का स्वाद अभी जुबान पर चढ़ा नहीं था, दूसरे इतनी सुबह कैसे नाश्ता करें! इस समय तो भारत में सुबह के 3.30 हो रहे थे। किसी तरह चाय पीकर जल्दी से बस में बैठे। हमारा सामान पीछे ट्रक में रखा था।

यात्री दो दलों में विभक्त थे– एक दल 'अ' – जो पहले कैलास यात्रा पर जाने वाला था और दूसरा दल 'ब' जो पहले मानसरोवर परिक्रमा करेगा। तकलाकोट से अगला पड़ाव तारचेन में था, प्रायः पचास किलोमीटर दूर। मार्ग में मानसरोवर तट पर जैदी शिविर पड़ता है, जहाँ कुछ देर रुककर यात्री स्नान करते हैं और पास ही एक पहाड़ी पर चढ़कर कैलास के प्रथम दर्शन करते हैं। इस यात्रा के रोमांच और उत्तेजना के बारे में क्या कहा जाए! लगता है बस अब जीवन सफल हो गया। अब कुछ भी हो जाए परवाह नहीं। मानसरावेर में स्नान के बाद कैलास दर्शन हो जाये तो फिर और क्या शेष रह जाता है चाहने को ? तो साहब, सुबह बस चलते ही गणपति बप्पा मोरिया के जयघोष से तकलाकोट गूँज उठा। गणेश चतुर्थी के दिन पहले गणपति– स्मरण किया फिर भजन गूँजने लगे। आज यात्रियों में कुछ अनोखा ही उत्साह था। सुबह का सुरमई अन्धेरा छँटता जा रहा था।

बस कच्चे पथरीले रास्ते पर हिचकोले खाती बढ़ रही थी। एक घंटे बाद अभी झपकी लगी ही थी कि अबुधाबी से आये राव साहब चीखे– 'अरे बाँयी ओर देखो बाँयी ओर! फैंटास्टिक!' सबने तुरंत बाँयी ओर मुँह घुमाया तो आवक रह गए। वह स्वप्न था या सत्य ? हल्के हल्के उजाले में आकाश के अनंत विस्तार के एक छोर पर दिव्य मणि–सा चमकता यह अपार गरिमामय पर्वत – शुभ्र, उज्जवल, मनमोहक !! गाइड बोला– 'यह गुरला मान्धाता पर्वत है। लोकश्रुति के अनुसार महाराजा मान्धाता ने मानसरोवर की खोज की थी और वहीं तट पर तपस्या की थी।'

7:30 बजे मान्धाता पर्वत के मंत्रमुग्ध कर देने वाले दर्शन के उपरान्त आगे बढ़े। हम एकदम मैदानी क्षेत्र से गुजर रहे थे। पठार, पहाड़ी, क्षेत्र से बिल्कुल भिन्न होता है। ऊँचाई पर रेगिस्तानी मैदान जैसा– जहाँ छोटे छोटे टीले, टीलेनुमा पहाड़ियाँ, ही ज्यादा होती हैं। 9 बजे के लगभग दो पहाड़ियों के बीच स्फटिक– सा निर्मल गहरे नीले रंग का जलाशय दिखा तो सब यात्री खुशी से चिल्ला उठे– मानसरोवर! पर गाइड ने बताया कि यह राक्षस ताल है। जिसे रावण–ह्रद भी कहते हैं। इसके बारे में कई

कथायें प्रचलित हैं। इसका जल आचमन या स्नान के लिए उपयुक्त नहीं माना जाता, न यहाँ कोई पूजा होती है।

कहते हैं, रावण ने तपस्या कर शिवजी से वरदान माँगा कि वह कैलास लंका ले जायेगा। सब देवता परेशान हो गये— अब शिवजी के दर्शनार्थ लंका जाना पड़ेगा ? बड़ी कठिनाई हो जायेगी। अंततः उन्होंने एक उपाय किया। जब रावण कैलास पर्वत उठाकर लंका की ओर बढ़ने लगा तो उसे तीव्र लघुशंका हुई। पास ही गणेश जी खड़े थे। रावण ने गणेश जी को कैलास थमाया और कहा, जब तक वे निवृत्त नहीं होते हैं तब तक कैलास भूमि पर न रखें। पर प्रभु की माया तो विचित्र होती है। एक ओर कैलासपति भारी होते चले गये और दूसरी ओर रावण को निवृत्त होने में घंटों लग गये। थककर गणेश जी ने कैलाश को भूमि पर रख दिया, सो रखा ही रह गया। कैलास, लंका जाने से बच गया। राक्षस ताल उसी रावण का बनाया हुआ है, इसीलिए अपावन माना जाता है।

11 बजे हम मानसरोवर तट पर पहुँचे। मानसरोवर— मानसरोवर ही है। उसकी उपमा नहीं दी जा सकती है। सूर्य की रश्मियाँ मानस के जल में परावर्तित हो अनंत सूर्यों का आभास करा रही थी। मानसरोवर की लहरें सागर की लहरों की तरह उठतीं—गिरतीं, क्षितिज और मानस के जल का रंग एक जैसा — एक रूप! कहाँ जल की सीमा खत्म होती है और क्षितिज शुरू होता है, जान पाना असंभव है। चारों ओर पठारी मैदान और कुछ कुछ छोटी पहाड़ियाँ, मध्य में यह दैवी अपार जल राशि जिसे स्वयं ब्रह्मा ने अपने मानस से रचा और जहाँ देवगण स्नान करने आते हैं। तट के आस पास रंगीन फूलों वाली घास थी जिस पर पाँव रखते ही धँसते थे।

मानसरोवर के हंसों के बारे में बहुत सुना था— काफी प्रयास किया कहीं दिखें— पर हंस तो नहीं, हाँ जल बतखें जरूर दिखीं। इसी मानसरोवर का वर्णन हमारे आदि ग्रंथों में मिलता है। रामायण,महाभारत, सभी पुराणों — विशेष कर स्कंद पुराण में इसका वर्णन है। बाणभट्ट की कादम्बरी, कालिदास के रघुवंश, कुमार संभवम् और पाली के बौद्ध ग्रंथों में भी इसका सुन्दर वर्णन है।

बौद्ध ग्रंथों में इसे अनोतप्त या अनवतप्त, जो ऊष्मा और कष्ट से परे है— कहा गया है। इसके चारों ओर सतलज, करनाली, (सरयू की एक सहयोगी नदी), ब्रह्मपुत्र और सिंधु के उद्गम के स्रोत हैं। इसके उत्तर में कैलास, दक्षिण में गुरला मान्धाता, पश्चिम में राक्षस ताल है। सागर तल से 14950 फीट की ऊँचाई पर स्थित मानसरोवर का व्यास 54 मील तथा गहराई 300 फीट है। यह 200 वर्गमील क्षेत्र में फैली हैं।

तिब्बती इसे त्सो मावांग या त्सो माफांग कहते हैं— यह विश्व की सबसे पवित्र, सबसे प्रसिद्ध और सबसे प्राचीन झील है। सर्वे आफ इंडिया द्वारा 1934 में प्रकाशित एच.सी.बराई व एच.एच हैडन की पुस्तक में कहा गया है कि मानव सभ्यता के ज्ञान में यह सबसे प्राचीन झील है। भूगोलविदों की जानकारी में आने वाली सबसे पहली झील भी मानसरोवर ही है।

हाँ, तो मानसरोवर के तट पर आकर मानों होशोहवास खो गए। एक दूसरे ही लोक में सब विचरने लगे। ठण्ड काफी थी, फिर परिक्रमा के लिए भी दुबारा आना था पर डॉक्टर अनिल व उनकी धर्मपत्नी झटपट स्नान की तैयारी करने लगे। अमरीका में 15 वर्ष बिताकर सिर्फ तीन वर्ष के लिए भारत आये इस डॉक्टर की श्रद्धा ने सबको स्नान के लिए प्रेरित किया। अनिल ने कहा– ' आते समय मैंने शिव पुराण पढ़ा था। उसमें लिखा था, मानसरोवर में एक बार स्नान करने से सात पीढ़ियाँ तर जाती हैं। ऐसा मौका फिर कहाँ मिलेगा?'

मानस को सबसे पहले प्रणाम किया, आचमन किया– एकदम मीठा अमृत जैसा स्वाद, फिर डरते–डरते पहले एक पाँव, ...फिर दूसरा पाँव, सर्दी लग रही थी। हड्डियाँ तक काँप रही थीं– पर एक बार जल में आधा शरीर डूबा– पहली डुबकी लगाई तो न सर्दी लगी न भय । किनारे किनारे घास काफी हैं– 15– 20 फीट भीतर जाने पर 3–4 फीट की गहराई मिलती है। लहरें काफी तेज होती हैं पर पानी इतना निर्मल है कि दूर से देखने पर भी तल के पत्थर साफ चमकते हैं।

मानस में स्नान कर सूर्य को अर्घ्य दिया– गायत्री मंत्र व महामृत्युंजय मंत्र का जप किया–बाहर आकर कपड़े बदले और भागे पहाड़ी चढ़ने, जहाँ से श्री कैलास दर्शन करने थे। आज तो मुँहमाँगी मुराद मिल रही थी। आज तो खज़ाना लुटाने को मन था। पाँव में पंख थे, मन आकाश में था। धरती की, शरीर की, सुध–बुध रह ही नहीं गयी थी। 15 मिनट लगे और पहाड़ को ऊपर फैले मैदान के कोने पर पहुँचते ही ठीक सामने ज्योतिरूप शिवलिंग के आकार का हिमखंड दिखायी दिया जो था बहुत दूर..........................पर बहुत पास लगा।

नीला आकाश आस पास कुछ नहीं, मात्र एक–एक ही केवल अत्युच्च शिखर, शुभ्र आभायुक्त, प्रभु का ज्योति स्वरुप! मौन व्याप गया था सर्वत्र । किसी को किसी का ध्यान न रहा। दंडवत प्रणाम कर सब चुप बैठ गये। दिलीप सिंघवी दूर तक शूटिंग करते चले गये थे। दौड़कर लौटे और लिपट गये। मेरे कंधे उनके प्रेमाश्रुओं से गीले हो गये – कुछ कहते ही नहीं बनता था– गला रूँधा था। मुझ सरीखे राजनीतिक पंक से घिरे कागज़ काले करने वाले कलमजीवी के लिए यह अनुभव साक्षात प्रभु दर्शन से कम न था।

शब्दार्थ

आलोक– प्रकाश	नयनाभिराम– आँखों को भाने वाला
गेस्ट हाउस– अतिथि गृह	पुलकित – प्रसन्न
दिक्कत– असुविधा	लोकश्रुति– लोक प्रचलित बातें
रश्मियाँ– किरणें	अपावन– अपवित्र
अत्युच्च– अत्यन्त ऊँचा	

अभ्यासार्थ प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. विदेश में हिंदी बोलने वाला लड़का कहाँ का था?

    (क) तिब्बत (ख) नेपाल

    (ग) भारत (घ) चीन

2. तिब्बती मक्खनवाली चाय किस पशु के दूध के मक्खन से बनाई जाती है?

    (क) गाय के (ख) याक के

    (ग) भैंस के (घ) बकरी के

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

3. लेखक को फिर नाश्ते में क्या–क्या मिला था ?
4. तकलाकोट से अगला पड़ाव कौन सा था ?
5. लोक मान्यता के अनुसार मानसरोवर की खोज किसने की थी ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

6. विदेश में अपनी मातृभाषा के दो शब्द सुनकर मन के तार क्यों झनझना जाते हैं ?
7. राक्षस ताल को रावण ह्रद क्यों कहते हैं ?
8. मानसरोवर का वर्णन किन किन आदि ग्रंथों में मिलता है ?
9. मानसरोवर की भौगोलिक स्थिति को समझाइये।

निबन्धात्मक प्रश्न

10. मानसरोवर के सौन्दर्य का वर्णन करते हुए इसके माहात्म्य को स्पष्ट कीजिए।
11. ''आज तो खज़ाना लुटाने को मन था।'' लेखक की इस अनुभूति को सकारण स्पष्ट कीजिए।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों की उत्तरमाला

1 क

2 ख